



जिस तरह प्रत्येक फल का अपना विशिष्ट रस होता है, उसी तरह संस्कृत के प्रत्येक कवि द्वारा रचित हर एक पद्य में अपना विशिष्ट रस होता है। फिर भी हमारी व्यक्तिगत रुचि के कारण किसी फल को अधिक पसंद करते हैं। यह व्यवहार जिस तरह किसी फल के महत्त्व को हानि नहीं पहुँचाता, उसी तरह महाकवियों के कुछ पद्य को पसंद करके रसास्वाद करने का भाव प्रस्तुत पाठ में होने से उन कवियों के अन्य पद्यों का महत्त्व किसी तरह कम नहीं होता है।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर यहाँ अलग-अलग कालखंड में हो गए और नाटक, महाकाव्य, कथा, आख्यायिका जैसे विविध साहित्य स्वरूप की काव्यरचना करके साहित्यजगत् में अमर हो गए छः महाकवियों की एक-एक रचना पसंद करके यहाँ प्रस्तुत की गई है।

पहला श्लोक महाकवि भास के एकांकी 'कर्णभार' में से लिया गया है। उसमें दान और होम की महिमा दर्शाई गई है। दूसरा श्लोक महाकवि कालिदास के 'मालविकाग्निमित्र' में से है, जिसमें दूसरे के बहकावे में आए बिना अपनी बुद्धि से अच्छे-बुरे का विचार करके निश्चय करने के लिए कहा गया है। भवभूति के 'उत्तररामचरित' में से लिए गए तीसरे श्लोक में महापुरुषों के मन की जिस तरह से लाक्षणिकता का वर्णन किया गया है, उससे पता चलता है कि प्रत्येक महापुरुष का मन वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है। चौथा श्लोक गद्यकार बाण की प्रसिद्ध रचना है, उसमें दुष्ट मनुष्य के स्वभाव की वास्तविकता का वर्णन है। पाँचवाँ श्लोक नाटककार शूद्रक के 'मृच्छकटिक' में से पसंद किया गया है। उसमें दरिद्र मनुष्य के हृदय का दयाजनक दुःख वर्णित है। अंतिम श्लोक रविगुप्त नामक कवि की रचना है। जिसमें सज्जन की प्रशंसा की गई है। इस वर्णन में सूचित वास्तविकता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। वह मनुष्य जीवन का हिस्सा बनना चाहिए, तभी काव्यशिक्षा सफल हो सकती है।

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्

सुबद्धमूलाः निपतन्ति पादपाः।

जलं जलस्थानगतं च शुष्यति

हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति ॥ 1 ॥ - भासस्य ॥

पुराणमित्येव न साधु सर्वं

न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते

मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥ 2 ॥ - कालिदासस्य ॥

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥ 3 ॥ - भवभूतेः ॥

अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः प्रायेण दुःसहो भवति।

रविरपि न दहति तादृग् यादृग् दहति वालुकानिकरः ॥ 4 ॥ - बाणस्य ॥

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम् ।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥ 5 ॥ – शूद्रकस्य ॥

सुजनो न याति वैरं परहितनिरतो विनाशकालेऽपि ।
छेदेऽपि चन्दनतरुः सुरभयति मुखं कुठारस्य ॥ 6 ॥ – रविगुप्तस्य ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) क्षयः विनाश, नाश **पादपः** वृक्ष, पेड़ (पाद अर्थात् पैर से-मूल से पानी पीता है, अतः वृक्ष पादप कहा जाता है ।) **मूढः** मूर्ख, कम बुद्धिवाला **रविः** सूर्य **बालुकानिकरः** बालू का ढेर **सुजनः** सज्जन, अच्छे व्यक्ति **चन्दनतरुः** चन्दन का वृक्ष

(स्त्रीलिङ्ग) शिक्षा शिक्षण, शिक्षा **दरिद्रता** गरीबी, दरिद्र्य

(नपुंसकलिङ्ग) **मुखम्** नोंक, धार, अग्रभाग **पदम्** = स्थान, पदवी

सर्वनाम : **अन्यतरत्** (नपुं.) दोनों में से कोई एक **अन्यः** (पुं.) दूसरा, पराया व्यक्ति

विशेषण : **सुबद्धमूलाः (पादपाः)** अच्छी तरह से फैली हुई जड़वाले (वृक्ष) **जलस्थानगतम् (जलम्)** पानी का स्थान (तालाब या समुद्र) में रहने वाला (पानी) **पुराणम् (काव्यम्)** प्राचीन-पुराणा (काव्य) **नवम् (काव्यम्)** नया, ताजा (तुरन्त रचा गया काव्य) **लब्धपदः (नीचः)** जिसने पद प्राप्त किया है ऐसा (नीच व्यक्ति, गुणहीन व्यक्ति) **नीचः** नीच, दुष्ट मानव **हुतम्** (यज्ञ की अग्नि में) होमा हुआ **दत्तम्** (किसी जरूरतमंद इंसान को) दिया हुआ **पुराणम्** पुराणा, प्राचीन

अव्यय : **तथैव** वैसे का वैसा, जैसा है वैसा ही **प्रायेण** अधिकतर

समास : कालपर्ययात् (कालस्य पर्ययः, तस्मात् - षष्ठी तत्पुरुष) । सुबद्धमूलाः (सुबद्धानि मूलानि येषां ते - बहुव्रीहि) । जलस्थानगतम् (जलस्य स्थानम् (-जलस्थानम्, षष्ठी तत्पुरुष), जलस्थानं गतम् -द्वितीया तत्पुरुष) । पर-प्रत्यय-नेय-बुद्धिः (परेषां प्रत्ययः (परप्रत्ययः, षष्ठी तत्पुरुष), परप्रत्ययेन नेया (-परप्रत्ययनेया, तृतीया तत्पुरुष), परप्रत्ययनेया बुद्धिः यस्य सः - बहुव्रीहि) । लोकोत्तराणाम् (लोकेभ्यः उत्तराः, तेषाम् - पञ्चमी तत्पुरुष) । लब्धपदः (लब्धं पदं येन सः - बहुव्रीहि) । बालुकानिकरः (बालुकानां निकरः - षष्ठी तत्पुरुष) । घनान्धकारेषु (घनः चासौ अन्धकारः, तेषु - कर्मधारय) । दीपदर्शनम् (दीपस्य दर्शनम् - षष्ठी तत्पुरुष) । परहितनिरतः (परेभ्यः हितम् (परहितम्, चतुर्थी तत्पुरुष), परहितेषु निरतः - सप्तमी तत्पुरुष) । विनाशकाले (विनाशस्य कालः, तस्मिन् - षष्ठी तत्पुरुष) । चन्दनतरुः (चन्दनस्य तरुः - षष्ठी तत्पुरुष) ।

कृदन्तः (क.भू.कृ.) धृतः धारण किया हुआ **मृतः** मरा हुआ **(सं.भू.कृ.)** परीक्ष्य जाँचकर, परीक्षण करके, परीक्षा करके **अनुभूय** अनुभव करके **(हे.कृ.)** विज्ञातुम् जानने के लिए

क्रियापद : प्रथम गण (परस्मैपदी) नि + पत् (निपतति) नीचे गिरना, गिरना **दह (दहति)** जलना **जीव (जीवति)** जीना, जीवित रहना

(आत्मनेपदी) भज् (भजते) भजना (ईश्वर की भक्ति करना) **शुभ् (शोभते)** सुशोभित होना

विशेष

1. शब्दार्थः कालपर्ययात् समय के बदलाव से निपतन्ति नीचे गिर जाते हैं साधु योग्य, अच्छा अवद्यम् निन्दा न की जा सके ऐसा पर-प्रत्यय-नेय-बुद्धिः पर अर्थात् दूसरे के प्रत्यय अर्थात् ज्ञान से, विश्वास से नेय संचालित

बुद्धिवाला **लोकोत्तराणाम्** लोक-संसार से ऊपर रहने वाले (महापुरुषों का) सामान्य लोगों से उत्तम कक्षा के व्यक्ति **विज्ञातुम् अर्हति** जाना जा सकता है, जानने योग्य है **अन्यस्मात्** दूसरे व्यक्ति के पास से **यादृग् दहति** जैसे जलता है **घनान्धकारेषु** गहरे अंधकार में **दीपदर्शनम्** दीपक का दर्शन **परहितनिरतः** परहित में संलग्न, दूसरों के हित में रत **छेदे अपि** काट दिया जाए तो भी **सुरभयति** सुगंधयुक्त बनाता है **कुठारस्य** कुल्हाड़ी (अर्थात् लकड़ी काटने का औजार) को

2. सन्धि : पुराणमित्येव (पुराणम् इति एव) । न चापि (न च अपि) । नवमित्यवद्यम् (नवम् इति अवद्यम्) । वज्रादपि (वज्रात् अपि) । कुसुमादपि (कुसुमात् अपि) । को नु (कः नु) । अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः (अन्यस्मात् लब्धपदः नीचः) । दुःसहो भवति (दुःसहः भवति) । रविरपि (रविः अपि) । दुःखान्यनुभूय (दुःखानि अनुभूय) । घनान्धकारेष्विव (घनान्धकारेषु इव) । सुखात्तु (सुखात् तु) । यो याति (यः याति) । नरो दरिद्रताम् (नरः दरिद्रताम्) । सुजनो न (सुजनः न) । परहितनिरतो विनाशकालेऽपि (परहितनिरतः विनाशकाले अपि) । छेदेऽपि (छेदे अपि) ।

स्वाध्याय

1. विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) शिक्षा कस्मात् कारणात् क्षयं गच्छति ? ☐
- (क) अवस्थापर्ययात् (ख) कालपर्ययात् (ग) बुद्धिपर्ययात् (घ) गुरुपर्ययात्
- (2) सन्तः किं कृत्वा अन्यतरत् भजन्ते ? ☐
- (क) परीक्ष्य (ख) दृष्ट्वा (ग) अनुभूय (घ) विचार्य
- (3) कीदृशः नीचः प्रायेण दुःसहो भवति ? ☐
- (क) लब्धपदः (ख) लब्धधनः (ग) लब्धयशाः (घ) लब्धविद्यः
- (4) दुःखानि अनुभूय किं शोभते ? ☐
- (क) धर्मः (ख) धनम् (ग) विद्या (घ) सुखम्
- (5) सुजनो न याति वैरं विनाशकाले अपि । ☐
- (क) परहितनिरतः (ख) परकर्मनिरतः (ग) परधर्मनिरतः (घ) परहानिनिरतः

2. एकेन वाक्येन संस्कृतभाषयाम् उत्तरत ।

- (1) सुबद्धमूलाः पादपाः कस्मात् कारणात् निपतन्ति ?
- (2) मूढः जनः कीदृशः भवति ?
- (3) लोकोत्तराणां चेतांसि कस्मादपि मृदूनि भवन्ति ?
- (4) सुखं कदा शोभते ?

3. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- (1) नवमित्यवद्यम् ।
- (2) कुसुमादपि ।

- (3) अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः।
 (4) यो याति।
 (5) विनाशकालेऽपि।

4. समासप्रकारं लिखत ।

- (1) सुबद्धमूलः (2) लोकोत्तराणाम्
 (3) लब्धपदः (4) वालुकानिकरः
 (5) परहितनिरतः

5. रिक्तस्थाने विशेष्यानुसारं योग्यं कोष्ठगतं विशेषणपदं लिखत ।

- (1) पादपाः निपतन्ति। (सुबद्धमूल)
 (2) काव्यम् अवद्यं भवति इति न। (नव)
 (3) लोकोत्तराणां चेतांसि वज्रादपि भवन्ति। (कठोर)
 (4) नीचः प्रायेण भवति। (दुःसह)
 (5) सुजनः विनाशकालेऽपि वैरं न याति। (परहितनिरत)

6. मातृभाषया संक्षिप्तं टिप्पणं लिखत ।

- (1) मूर्ख और सज्जन का भेद
 (2) नीच व्यक्ति की मानसिकता
 (3) सुजन की सुजनता का स्वरूप

7. अर्थविस्तार कीजिए।

- (1) शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्
 सुबद्धमूलाः निपतन्ति पादपाः।
 जलं जलस्थानगतं च शुष्यति
 हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति ॥
 (2) वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
 लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥
 (3) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
 घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
 सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
 धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥

प्रवृत्ति

- महाकवि कालिदास के महाकाव्य में से आपकी पसंद का कोई एक पद्य लिखिए।
- कर्णभार की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।